Yojna IAS
C-32 Noida Sector-02
Uttar Pardesh (201301)
Contact No. +8595907569

CURRENT AFFAIRS

Date – 18 June 2022

I2U2 पहल

- I2U2 पहल के एक भाग के रूप में भारत, इज़राइल, संयुक्त अरब अमीरात और अमेरिका जुलाई 2022 में अपना पहला आभासी शिखर सम्मेलन आयोजित करेंगे।

I2U2 पहल:

पृष्ठभूमि:

- इस क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा, बुनियादी ढांचे और परिवहन से संबंधित मुद्दों से निपटने के लिए अक्टूबर 2021 में इज़राइल और यूएई के बीच अब्राहमिक समझौते के बाद शुरू में I2U2 का गठन किया गया था।
- उस समय इसे ‘अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग मंच’ कहा जाता था।
- इसे ‘वेस्ट एशियन क्वाड’ भी कहा जाता था।

परिचय:

- I2U2 पहल भारत, इज़राइल, अमेरिका और संयुक्त अरब अमीरात का एक नया समूह है।
- समूह के नाम में 'I2' का अर्थ भारत और इज़राइल है, जबकि 'U2' का अर्थ संयुक्त राज्य और संयुक्त अरब अमीरात है।
- यह एक बड़ी उपलब्धि है जो इस क्षेत्र में हो रहे भू-राजनीतिक परिवर्तनों को दर्शाती है।
- यह न केवल दुनिया भर में गठजोड़ और साझेदारी की प्रणाली को पुनर्जीवित और पुन: सक्रिय करेगा, बल्कि उन साझेदारियों को भी जोड़ देगा जो पहले मौजूद नहीं थीं या पूरी तरह से उपयोग नहीं की गई थीं।

महत्त्व:

सुरक्षा सहायता:

- इससे देशों को इन नए समूहों के ढांचे के भीतर चार देशों के बीच सुरक्षा सहयोग का पता लगाने में मदद मिलेगी।

तकनीकी केंद्र:

- इनमें से प्रत्येक देश एक तकनीकी केंद्र है।
- इनमें से प्रत्येक देश में जैव प्रौद्योगिकी निश्चित रूप से प्रभावी है।

खाद्य सुरक्षा:

- यह पहल खाद्य सुरक्षा पर चर्चा करने का अवसर प्रदान करती है।

विभिन्न क्षेत्रों में एक साथ काम करना:

- ये देश कई स्तरों पर सहयोग कर सकते हैं, चाहे वह तकनीक हो, व्यापार हो, जलवायु हो, COVID-19 के खिलाफ लड़ाई हो या सुरक्षा।

भारत के लिए I2U2 का महत्व:

अब्राहमिक संधि से लाभ:

- भारत को संयुक्त अरब अमीरात और अन्य अरब राज्यों के साथ अपने संबंधों को जोखिम में डाले बिना इजरायल के साथ संबंधों को मजबूत करने के लिए अब्राहम समझौते का लाभ मिलेगा।

YOJNA IAS

बाजार लाभ:

- भारत एक विशाल उपभोक्ता बाजार है। यह उच्च तकनीक और अत्यधिक मांग वाले सामानों का एक प्रमुख उत्पादक भी है। इस ग्रुपिंग से भारत को फायदा होगा।

संधि:

- यह भारत को राजनीतिक और सामाजिक गठबंधन बनाने में मदद करेगा।

स्वदीप कुमार

पोलियो वायरस

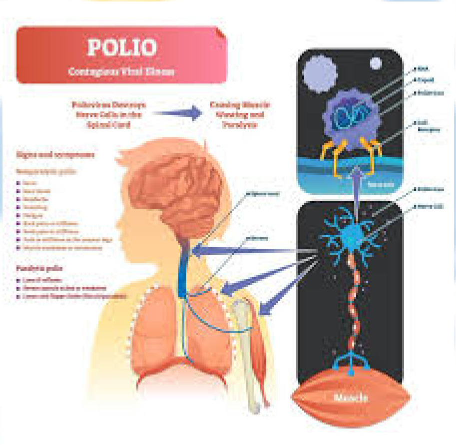

- हाल ही में, कोलकाता में 'सीवेज नमूनों की पर्यावरण निगरानी' के दौरान 'वैक्सीन-व्युत्पन्न पोलियोवायरस-वीडीपीवी' की उपस्थिति पाई गई थी।
- सबसे अधिक संभावना है कि यह रोग प्रतिरोधक क्षमता की कमी के कारण कई गुना बढ़ गया है। यह मानव-से-मानव पोलियो स्थानांतरण का मामला नहीं है।
- वीडीपीवी कमजोर पोलियोवायरस का एक प्रकार है, इसे शुरू में ओपीवी (ओरल पोलियो वायरस वैक्सीन) में शामिल किया गया था और जो समय के साथ उत्परिवर्तित होता है और जंगली या स्वाभाविक रूप से होने वाले वायरस की तरह व्यवहार करता है।

पोलियो क्या है?

- पोलियो एक अक्षम और संभावित घातक वायरल संक्रामक रोग है जो तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करता है।
- प्रतिरक्षा विज्ञान की दृष्टि से पोलियो विषाणु के मुख्य रूप से तीन अलग-अलग उपभेद हैं:
    - जंगली पोलियो वायरस 1 (WPV1)
    - जंगली पोलियो वायरस 2 (WPV2)
    - जंगली पोलियो वायरस 3 (WPV3)

- तीनों उपभेद लक्षणात्मक रूप से समान हैं और लकवा और मृत्यु का कारण बन सकते हैं।
- हालांकि आनुवंशिक और वायरोलॉजिकल अंतर हैं, इन तीन उपभेदों को अलग-अलग वायरस बनाते हुए, प्रत्येक को अकेले समाप्त करने की आवश्यकता है।

फैलाव:

- यह वायरस मुख्य रूप से 'मल-मौखिक मार्ग' या दूषित पानी या भोजन के माध्यम से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है।
- यह मुख्य रूप से 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को प्रभावित करता है। आंत में वायरस की संख्या बढ़ जाती है, जहां यह तंत्रिका तंत्र पर आक्रमण कर सकता है और पक्षाघात का कारण बन सकता है।

लक्षण:

- पोलियो से पीड़ित अधिकांश लोग बीमार महसूस नहीं करते हैं। कुछ लोगों में केवल मामूली लक्षण ही पाए जाते हैं, जैसे- बुखार, थकान, जी मिचलाना, सिर दर्द, हाथ-पैर में दर्द आदि।
- दुर्लभ मामलों में, पोलियो संक्रमण के कारण मांसपेशियों की कार्यक्षमता (लकवा) स्थायी रूप से समाप्त हो जाती है।
- अगर सांस लेने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली मांसपेशियां लकवाग्रस्त हो जाएं या मस्तिष्क में कोई संक्रमण हो जाए तो पोलियो घातक हो सकता है।

रोकथाम और इलाज:

- इसका कोई इलाज नहीं है लेकिन टीकाकरण से इसे रोका जा सकता है।

टीकाकरण:

- ओरल पोलियो वैक्सीन (ओपीवी): यह संस्थागत प्रसव के दौरान जन्म के समय दी जाती है, इसके बाद 6, 10 और 14 सप्ताह में तीन प्राथमिक खुराक और 16-24 महीने की उम्र में बूस्टर खुराक दी जाती है।
- इंजेक्टेबल पोलियो वैक्सीन (आईपीवी): यह यूनिवर्सल टीकाकरण कार्यक्रम (यूआईपी) के तहत डीपीटी (डिप्थीरिया, पर्टुसिस और टेटनस) की तीसरी खुराक के साथ एक अतिरिक्त खुराक के रूप में दी जाती है।

हाल के प्रकोप:

- 2019 में, फिलीपींस, मलेशिया, घाना, म्यांमार, चीन, कैमरून, इंडोनेशिया और ईरान में पोलियो के प्रकोप की सूचना मिली, जो ज्यादातर वैक्सीन-व्युत्पन्न थे, जिसमें वायरस का एक दुर्लभ स्ट्रेन आनुवंशिक रूप से वैक्सीन में स्ट्रेन से उत्परिवर्तित होता है। .
- विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार, यदि वायरस को कम से कम 12 महीनों के लिए एक अप्रतिरक्षित या कम-प्रतिरक्षित आबादी में प्रसारित करने की अनुमति दी जाती है, तो यह संक्रमण का कारण बन सकता है।

भारत और पोलियो:

- तीन वर्षों के दौरान शून्य मामलों के बाद भारत को वर्ष 2014 में डब्ल्यूएचओ द्वारा पोलियो मुक्त प्रमाणन मिला।
- यह उपलब्धि उस सफल पल्स पोलियो अभियान से प्रेरित है जिसमें सभी बच्चों को पोलियो की दवा पिलाई गई।
- देश में जंगली पोलियो वायरस का अंतिम मामला 13 जनवरी, 2011 को दर्ज किया गया था।

पोलियो उन्मूलन उपाय:

वैश्विक पोलियो उन्मूलन पहल:

- इसे राष्ट्रीय सरकारों और WHO द्वारा वर्ष 1988 में ग्लोबल पोलियो उन्मूलन पहल (GPEI) के तहत शुरू किया गया था। वर्तमान में दुनिया की 80% आबादी पोलियो मुक्त है।

YOJNA IAS

- पोलियो टीकाकरण गतिविधियों के दौरान विटामिन ए के व्यवस्थित प्रशासन के माध्यम से अनुमानित 1.5 मिलियन नवजात मौतों को रोका गया है।

विश्व पोलियो दिवस:

- यह हर साल 24 अक्टूबर को मनाया जाता है ताकि देशों को बीमारी के खिलाफ अपनी लड़ाई में सतर्क रहने का आह्वान किया जा सके।

भारत:

पल्स पोलियो कार्यक्रम:

- इसे ओरल पोलियो वैक्सीन के तहत 100% कवरेज प्राप्त करने के उद्देश्य से शुरू किया गया था।

गहन मिशन इंद्रधनुष 2.0:

- यह पल्स पोलियो कार्यक्रम (वर्ष 2019-20) के 25 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में शुरू किया गया एक राष्ट्रव्यापी टीकाकरण अभियान था।

सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम:

- इसे वर्ष 1985 में 'प्रतिरक्षण के विस्तारित कार्यक्रम' में संशोधन के साथ शुरू किया गया था।
- इस कार्यक्रम के उद्देश्यों में टीकाकरण कवरेज में तेजी से वृद्धि, सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार, स्वास्थ्य सुविधा स्तर पर एक विश्वसनीय कोल्ड चेन सिस्टम की स्थापना, वैक्सीन उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना आदि शामिल हैं।

YOJNA IAS

स्वदीप कुमार